अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली । मंगलवार, 14 मई 2019

सफलता हमारे जीवन में चुनौतियों से जूझने के कारण मिलती है। ऐसा न करने पर हम विफल होते हैं।
-जॉन सी मैक्सवेल

अमेरिकी लेखक

प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान से उबरने के लिए समग्र रूप से सोचने का समय आ गया है। क्या उम्मीद की जाए कि 23 मई के बाद बनने वाली नई सरकार इस पर प्राथमिकता के साथ विचार करेगी?

फैनी का सबक

ओडिशा ने दो दशक में आए सबसे भीषण तूफान फैनी से जनहानि को काफी हद तक कम करने में सफलता पाई, इसके बावजूद वहां अब तक 64 लोगों की मौत हो चुकी है। तूफान ने जैसा कहर बरपाया उससे राज्य के 14 जिलों में सामान्य जनजीवन बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। 1999 में आए महाचक्रवात के कारण राज्य में दस हजार लोगों की मौत हो गई थी और उसके बाद राज्य ने आपदा प्रबंधन को लेकर जो कदम उठाए थे, उसका असर इस बार दिखा है। इसी वजह से रिकॉर्ड 14 लाख लोगों को समय रहते सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया था, मगर फैनी के कारण राज्य में आधारभूत संरचना को जो नुकसान हुआ है, उससे उबरने में लंबा वक्त लगेगा। यह चुनौती कितनी बड़ी है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस तूफान के कारण राज्य की एक तिहाई आबादी, करीब डेढ़ करोड़ लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। लाखों मवेशी मारे गए हैं। तूफान के कारण बिजली के हजारों ट्रांसफार्मर, तकरीबन 80 हजार किलोमीटर लंबी बिजली की लाइन, पेयजल और संचार की व्यवस्था ठप हो गई। अस्पतालों सहित सैकड़ों सरकारी इमारतों को तो नुकसान पहुंचा ही है, लाखों कच्चे घर तक ढह गए हैं। अभी तो भुवनेश्वर, पुरी और कटक जैसे शहरों में ही व्यवस्था को सामान्य होने में कई हफ्ते लगेंगे। राज्य को तूफान के कारण पचास हजार करोड़ रुपये के नुकसान का अनुमान है। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने केंद्र सरकार से उनके राज्य को विशेष दर्जा देने की मांग की है, इसके तमाम पहलुओं पर विमर्श किया जा सकता है। हालांकि खुद प्रधानमंत्री मोदी ने पटनायक के साथ हवाई दौरा कर राज्य को एक हजार करोड़ रुपये की फौरी मदद देने की घोषणा की थी, पर वह नाकाफी है। इस आपदा ने पिछले वर्ष केरल और उससे पहले जम्मू-कश्मीर में आई भीषण बाढ़ की याद दिला दी, जिसके कारण उन राज्यों में खासा नुकसान हुआ था। ऐसी भीषण प्राकृतिक आपदा से कोई भी राज्य अकेले नहीं निपट सकता; जाहिर है, ओडिशा को इस समय चौतरफा मदद की जरूरत है। दरअसल प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान से उबरने के लिए समग्र रूप से सोचने का समय आ गया है। क्या उम्मीद की जाए कि 23 मई के बाद बनने वाली नई सरकार इस पर प्राथमिकता के साथ विचार करेगी?

सूफी पंथ को तालिबान की चुनौती

लाहौर में सूफी संत की दरगाह पर हुआ हमला पाकिस्तान में चल रहे वहाबी तालिबानी वर्चस्व की जंग की ही एक कड़ी है। वहां सूफी शिया मजारों, मस्जिदों में आत्मघाती हमलों का लंबा इतिहास है।

आर विक्रम सिंह, पूर्व सैनिक, पूर्व प्रशासक

लाहौर में सूफी संत सैयद अली बिन उस्मान की दरगाह पर हुआ हमला पाकिस्तान में चल रहे वहाबी तालिबानी वर्चस्व की जंग की ही एक कड़ी है। वहां सूफी शिया मजारों, मस्जिदों में आत्मघाती हमलों का लंबा इतिहास है। हमले और भी होंगे, क्योंकि पकिस्तान को पूरी तरह कट्टर इस्लामी मुल्क बनाने का लक्ष्य अभी बाकी है। कट्टर वहाबी-सलाफी इस्लाम में पीरों, दरगाहों की जगह नहीं है। इस्लाम के आंतरिक वैचारिक संघर्ष में दरगाहों, मजारों पर मत्था टेकना, जियारत करना इस्लाम से बाहर है और कुफ्र की शक्ल लिए हुए है। कल वह समय आएगा, जब तालिबानी सोच सूफियों को भी अहमदियों की तरह इस्लाम से खारिज कर देगी। वहाबी तालिबानी विचारधारा के प्रर्वतकों का उद्देश्य इन्हें इस्लाम से खारिज करना नहीं है। बल्कि वे चाहते है कि ये लोग पुनः अपना पंथ बदलते हुए पीरों, फकीरों को छोड़ उनके कट्टर अनुयायी बनने की राह पर चले आएं।

सूफी पंथ, जिसे भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के सांस्कृतिक इस्लाम के नाम से भी जाना जाता है, तलवार के बाद इस्लामी धर्म परिवर्तन का सबसे बड़ा कारक बना। सूफी इस्लाम का एक प्राचीन रहस्यवादी पंथ है, जिसने भारत में इस्लामी विचारों के साथ स्थानीय परंपराओं को समन्वित करते हुए धार्मिक विस्तार का कार्य किया है। बौद्ध-हिंदू परंपराओं के भिक्षुओं-साधुओं से मुकाबला करने के लिए संतों के स्थान पर पीरों, मठों के स्थान पर खानकाहों और मंदिरों के स्थान पर मजारों के विकल्प दिए। मंदिरों की परंपराओं, भजन, पूजा-पद्धतियों के स्थान पर मजारों को अपनी श्रद्धा के स्थल के रूप में ढाला। इस प्रकार इस्लाम में धर्म परिवर्तन का काम आसान हुआ। उदाहरण के लिए, कश्मीर में धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया सूफी संत बुलबुल शाह के कश्मीरी शासक रिंचेन को इस्लाम में दीक्षित करने के साथ प्रारंभ होती है। सूफी पंथ भारत के अन्य बहुत से ग्रामीण क्षेत्रों में इस्लाम के विस्तार का माध्यम बना। शासक वर्ग तो तलवार के दम पर धर्मांतरित हो रहा था। इस तरह पंजाब और बंगाल के गांवों तथा दक्षिण भारत के तटीय प्रदेशों में इस्लाम का क्षेत्र विस्तार होता गया। उस समय इस्लामी शासकों का जोर विस्तार पर था, वैचारिक शुद्धता पर नहीं। 20वीं सदी में आकर सऊदी अरब और ईरान के तेल के धन ने इस वैचारिक शुद्धता के अभियान को हवा दी। अब फोकस उस जेहाद पर है, जिसे दुनिया इस्लामी आतंकवाद के रूप में जानती है। इस्लाम के विस्तार में अपना प्रारंभिक योगदान दे चुकने के बाद सूफी विचारधारा भी इनके धर्मयुद्ध का लक्ष्य बन चुकी है। यह एक प्रकार से धर्म परिवर्तन का दूसरा अभियान है। इसके परिणामस्वरूप हम देख रहे हैं कि भारत में वहाबी-सलाफी विचारधारा के समर्थकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। जाकिर नाइक आदि कट्टरवादियों ने सूफियों को अपना विरोधी घोषित किया है। सूफियों का सलाफी हो जाना नए धर्म परिवर्तन जैसा है। सूफी इस्लाम को मानने वालों को आतंकित करते हुए बमों के धमाकों के अभियान से सूफी लक्षित होंगे और उनमें अपने पंथ बदलने का संदेश चला जाएगा। दूसरा, यह कि हिंदुत्व के पुनर्जागरण पर इन आतंकी घटनाओं का ठीकरा फोड़कर इससे पल्ला झाड़ना भी आसान हो जाएगा।

कश्मीर में इस्लाम का विस्तार सुल्तानों की तलवार और सूफियों के धर्म प्रचार द्वारा किया गया था। पिछले कश्मीर भ्रमण में एक कश्मीरी बुद्धजीवी ने स्वीकार किया कि सूफी परंपरा के कश्मीर को अब पुनः पंथ परिवर्तन की स्थितियों से गुजरना पड़ रहा है। लाल देद और शेख नरूद्दीन को, जिनकी शिक्षाओं से कश्मीरियत का ताना-बाना बना था, आज कोई पूछने वाला नहीं हैं। मजारों, खानकाहों, पीरों-फकीरों का सूफी संप्रदाय आज रक्षात्मक स्थिति में आ गया है। मजहब की वैचारिक शुद्धता का यह अभियान, मानने वालों को उनकी जमीन से काटकर वैश्विक वर्चस्व और कट्टरवाद की सोच से जोड़ता है। भारतीय मूल के नोबल पुरस्कार प्राप्त प्रसिद्ध लेखक वीएस नायपॉल ने अपनी पुस्तक *बियांड बिलीफ : एमंग कन्वर्टेड पीपल* में कहा है, 'धर्म परिवर्तित व्यक्ति की विश्वदृष्टि बदल जाती है। उनका इतिहास बदल जाता है, वह अपने इतिहास को खुद खारिज कर देता है, उसे वह सब छोड़ना पड़ता है, जो पहले उसका अपना रहा था।' लेकिन भारत में धर्म परिवर्तन के बहुत बाद तक भी भारतीय मुस्लिम समाज अपनी मूल संस्कृति से जुड़ा रहा। जुड़ाव के इसी दर्शन ने इस्लाम को प्रभावित कर सूफी इस्लाम की सांस्कृतिक विचारधारा को जन्म दिया है, जो हमारे यहां सनातन धर्म और इस्लाम के बीच से गुजरती दिखती है। कट्टरपंथियों का लक्ष्य इस जमीनी जुड़ाव को भी पूरी तरह से खत्म करना है। अतः सूफी पंथ का समापन ही उनका लक्ष्य बन जाता है और सूफी फकीरों के स्थान, मजारें आतंकी हमलों के लक्ष्य बन रहे हैं। वे कट्टरता को उस स्तर तक ले जाना चाहते हैं, जिसमें संपूर्ण विश्व के मुस्लिम समाज को एक खलीफा, एक झंडा एवं एक किताब के नीचे लाया जा सके।

इस देश के नागरिकों को इस्लामी जगत में हो रहे इस वैचारिक परिवर्तन को समझना जरूरी है, जो आतंकवाद में परिणत हो रहा है। विचारों का यह टकराव भारतीय उपमहाद्वीप में विशेष रूप से होगा। गैर-मुस्लिम देशों में भारत में सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी का निवास है। यहां का सांस्कृतिक इस्लाम कट्टरवादी वैश्विक इस्लाम की राह में सबसे बड़ी बाधा भी है। हम अपने देश में समानता और सांस्कृतिक तथा सामाजिक समरसता का लक्ष्य लेकर चले हैं। एक इस्लाम है पीरों-फकीरों का और दूसरा है जाकिर नाइक जैसे जेहादियों का। सदियों पहले आक्रांता हाथ में तलवारें लेकर आए थे, आज कहीं कोई तलवार नहीं है। हमारे अल्पसंख्यक समाज को अब अपने विवेक से निर्णय लेना है। यह निर्णय भारतीय मुसलमानों को ही नहीं, भारत की सांस्कृतिक समरसता के पक्षधर समस्त नागरिकों को भी लेना है। किसी सूफी का तालिबानी बन जाना इस्लाम का आंतरिक मामला नहीं रहा। भारतीय समाज को इस्लामी जगत में हो रही इस उठापटक से तटस्थ नहीं रहना है, क्योंकि इससे देश के भविष्य का मार्ग प्रभावित होता है। हमें तो उस विचाराधारा का साथ देना है, जो सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से भारतीय राष्ट्रीय सोच के साथ खड़ी होती हो।

अंतर्ध्वनि

>> जैनेंद्र कुमार

बाजार का जादू आंख की राह काम करता है

बाजार में एक जादू है। वह जादू आंख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है। पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुंच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूं, वह भी लूं। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैन्सी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है। पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी? पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है। वह यह कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो। मन खाली हो, तब बाजार न जाओ। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना। पड़ोस में एक महानुभाव रहते हैं, जिनको लोग भगत जी कहते हैं। चूरन बेचते हैं। किसी एक भी दिन चूरन से उन्होंने छह आने पैसे से ज्यादे नहीं कमाये। इन चूरन वाले भगत जी पर बाजार का जादू नहीं चल सकता।

-हिंदी के दिवंगत साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> प्रवीण तुलपुले

कैंसर पीड़ित बच्चों को हंसाने का काम करता हूं

मेरा स्वभाव बचपन से ही हंसी-मजाक वाला है। जब मैं 13-14 साल का था, तभी से मैंने जादू दिखाना शुरू किया। तब यह सब शौकिया तौर पर चल रहा था। मुझे अंदाजा भी नहीं था कि एक दिन इसे पेशेवर तरीके से आयोजित करूंगा, ताकि कैंसर पीड़ित बच्चों के चेहरों पर मुस्कान ला सकूं। पढ़ाई खत्म करने के बाद मुझे नौसेना में अफसर कैडेट के रूप में तैनाती मिली। मेरे काम के लिए मुझे 1983 में राष्ट्रपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इन सबके बीच जादू दिखाने की ललक मेरे मन में मौजूद रही। नौसेना के कार्यक्रमों में, सहकर्मियों की पार्टियों में, दोस्तों के घर विभिन्न मौकों पर मैं शौकिया तौर पर कार्यक्रम करता रहा। पर इसे लेकर गंभीर नहीं था। फिर मेरी पोस्टिंग मुंबई हुई, जहां मेरी मुलाकात कई पेशेवर जादूगरों से हुई। तब मुझे लगा कि जादू सिर्फ लोगों को चौंकाना नहीं, बल्कि उनके चेहरों पर मुस्कान लाना और खेल-खेल में कुछ सिखाना भी है। एक दिन मेरे दोस्त ने कहा कि बच्चों की एक पार्टी है, वहां जोकर बनकर आ जाना। जोकर बनकर जब मैं वहां गया, तो पता चला कि वे कैंसर पीड़ित बच्चे हैं। उनमें कोई व्हीलचेयर पर था, किसी के चेहरे पर मास्क लगा था, तो किसी के बाल बिल्कुल गायब थे। उन्हें शायद पता भी नहीं था कि उन्हें क्या हुआ है। उनमें सामान्य बच्चों की तरह जीने की ललक थी।

कैंसर पीड़ित बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने के लिए मैं नियमित अस्पतालों में जाता रहता हूं।

उन्हीं में से एक बच्चा पूरे समय मेरे आगे-पीछे घूमता रहा। मैंने उसे अपना खेल दिखाया, उसने मेरे साथ फोटो भी खिंचाई। उसके साथ मेरी फोटो एक अखबार में भी छपी। पर कुछ दिनों बाद पता चला कि वह बच्चा नहीं रहा। उस घटना से मेरे दिल पर चोट लगी, पर यह जानकर तसल्ली मिली कि मैंने उसकी जिंदगी की एक बड़ी इच्छा पूरी कर दी। दरअसल वह बच्चा जोकर से मिलना चाहता था। उस दिन के बाद मैंने अपने जोकर वाले रूप का नाम 'हैप्पी द क्लाउन' रख लिया और तब से मेरा एक ही मकसद बन गया कि लोगों में खुशियां बांटनी है।

मेरी नौकरी अच्छी चल रही थी। पर उस घटना के बाद जादू और जोकर को लेकर मेरा जुनून इतना बढ़ा कि मैंने नौकरी छोड़ दी। नौसेना में पेंशन के लिए जितने साल चाहिए होते हैं, उतने अभी पूरे नहीं हुए थे। इसलिए मुझे पेंशन भी नहीं मिलती। इसको लेकर मुझ पर सबने तंज कसे, कुछ ने मुझे पागल कहा, तो कइयों ने बेवकूफ समझा। इस कदम के बाद मेरा परिवार बेहद कठिन दौर से गुजरा, पर वक्त के साथ सब कुछ व्यवस्थित होता चला गया। अब मैं पेशेवर जादूगर की तरह कार्यक्रम करता हूं। अन्य शहरों में भी बुलाने पर जाता हूं।

इसके साथ ही कई गैर-सरकारी संगठनों के लिए मुफ्त में कार्यक्रम करता हूं। कैंसर पीड़ित बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने के लिए मैं नियमित मुंबई के टाटा मेमोरियल, वाडिया और केईएम अस्पतालों में जाता रहता हूं। इसके साथ ही 'मिलाप' नाम की एक वेबसाइट के साथ मिलकर क्राउड फंडिंग के जरिये बच्चों के इलाज के लिए मैं पैसे भी जुटाता हूं। मेरे प्रयासों से अब तक दो लाख रुपये की मदद आ चुकी है। मुझसे जितना हो सकता है, कैंसर से जूझ रहे बच्चों के इलाज में मदद करने के साथ, उनके चेहरों पर मुस्कान लाने की कोशिश करता हूं। मुझे लगता है कि यह काम करते हुए मैंने अपने जीवन का सही रास्ता ढूंढ लिया है।

अपनों के हाथों पिटती हिंदी

इन दिनों चुनावों का बोलबाला है। टेलीविजन पर आकर दक्षिण भारत के नेता, तृणमूल के बांग्लाभाषी लोग, ओडिशा, आंध्र प्रदेश यहां तक कि तमिलनाडु के नेता और कुछ पैनलिस्ट हिंदी में भी बोलते नजर आते हैं। हाल ही में सैम पित्रोदा को भी हिंदी में बोलते सुना गया। एक खबर के अनुसार डीएमके ने, जिसकी राजनीति हिंदी विरोध पर ही परवान चढ़ी थी, इस बार चेन्नई में रहने वाले हिंदी भाषियों के लिए अपनी पार्टी की ओर से हिंदी में पर्चे छपवाए थे। इसे हिंदी की ताकत ही कहेंगे कि वह बिना किसी आंदोलन और समर्थन के दूर-दराज के उन इलाकों में जा पहुंची है, जहां कुछ दशक पहले तक इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इसमें हिंदी फिल्मों, मीडिया, इंटरनेट और चौबीस घंटे चलने वाले चैनल्स का बड़ा हाथ है। इन दिनों तो विदेश में रहकर भी बहुत से हिंदी चैनल्स देखे जा सकते हैं। ऑनलाइन अखबार पढ़े जा सकते हैं। खुशी की बात है कि हिंदी ग्लोबल यानी कि भूमंडल में फैली हुई और लोकल यानी कि स्थानीय साथ-साथ है।

कई चैनल्स जो कल तक सिर्फ अंग्रेजी में बातचीत दिखाते थे, वे द्विभाषी हो चले हैं। अंग्रेजी के चैनल्स पर बहुत से पैनलिस्ट धड़ल्ले से हिंदी में बोलते हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव अंग्रेजी में पूछे गए सवालों का जवाब हिंदी में देते हैं। एक बार उनसे पूछा भी गया था कि आप अच्छी-खासी अंग्रेजी जानते हैं, फिर अपनी बात हिंदी में ही क्यों कहते हैं। तब उन्होंने कहा था जनता से जुड़ना चाहते हैं, इसीलिए उस भाषा में बोलते हैं, जो लोगों की समझ में आ सके। इसके विपरीत कांग्रेस पार्टी है, जिसने कर्नाटक के चुनावों के दौरान मेट्रो ट्रेन में हिंदी में भी निर्देश लिखने पर हिंदी के विरुद्ध आंदोलन तक चला दिया था। जबकि इसे त्रिभाषा फॉर्मूला के अंतर्गत ही लिखा गया था। हिंदी के साथ कन्नड़ और अंग्रेजी भी मौजूद थी, लेकिन विरोध का शिकार सिर्फ हिंदी को होना पड़ा। हाल ही में कांग्रेस नेता शशि थरूर ने भी कहा था कि हिंदी लादी जा रही है। हिंदी प्रदेश में कांग्रेस को वोट तो चाहिए, लेकिन दक्षिण में उसे लगता है कि हिंदी को ठोककर ही काम चल सकता है, जबकि लोग वहां हिंदी सीख रहे हैं। आखिर इस तरह का दोहरापन क्यों? याद नहीं आता कि हिंदी प्रदेश में भाषा के नाम पर किसी के साथ भेदभाव किया गया हो। यहां तो अक्सर सुर समावेशी रहता है कि हिंदी क्षेत्र में अन्य भाषाएं भी सीखी जानी चाहिए। तमाम भारतीय भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद किया जाना चाहिए, जिससे हिंदी भाषी उसे पढ़ सकें, लेकिन नेता, लोगों को भड़काकर वोट बटोरने के लिए जब चाहे तब हिंदी के खिलाफ विष वमन करते रहते हैं। आखिर उन्हें हिंदी प्रदेश के पचपन करोड़ लोगों का ध्यान क्यों नहीं आता कि उनकी भाषा का अपमान एक तरह से उनका अपमान भी है।

नेताओं से ज्यादा दुखद यह है कि हिंदी प्रदेशों में हिंदी के अपने ही उसे दुर्गति में झोंक रहे हैं। इस साल उत्तर प्रदेश बोर्ड की परीक्षा में दस लाख बच्चे हिंदी में फेल हो गए। आखिर इसकी क्या वजह हो सकती है? क्या अध्यापक हिंदी ठीक से नहीं पढ़ाते? या बच्चे हिंदी को इतना मामूली समझते हैं कि बिना पढ़े ही पास होने की सोचते हैं? या कि ध्यान इस बात पर है कि पढ़ने का मतलब सिर्फ और सिर्फ अंग्रेजी सीखना है, क्योंकि कई दशकों से बच्चों और विद्यार्थियों को तमाम माध्यमों द्वारा यह बात लगातार सिखाई गई है कि जीवन में कुछ करना है, तो अंग्रेजी जानो, उसे ही सीखो, उसी पर ध्यान दो। हिंदी का क्या है, आगे चलकर जब करियर की उड़ान भरोगे, तो यह किसी काम नहीं आएगी। अंग्रेजी सीखना अच्छी बात है, लेकिन अपनी ही भाषा, जिसे हिंदी कहते हैं, उसका इतना तिरस्कार कहां तक जायज है!

क्षमा शर्मा

हरियाली और रास्ता

निशा मैडम, पहाड़ा और बच्चे

एक शिक्षिका की कहानी, जिसने बच्चों को व्यक्तित्व विकास के गुर सिखाए।

***निशा** मैडम की पांचवीं कक्षा में पहली क्लास थी। पहली बार बच्चे और टीचर मिल रहे थे। वह क्लास में आईं और बोर्ड पर नौ का पहाड़ा लिखने लगीं। पर यह क्या, उन्होंने नौ दूनी सोलह लिखा! बच्चे खिलखिलाकर हंसने लगे थे। मैडम ने बच्चों से पूछा, तुम लोग क्यों हंस रहे हो? बच्चों को यकीन हो गया कि नई मैडम को कुछ नहीं आता। पर टीचर को यह बताना कि, आपने गलती की, बिल्ली के गले में घंटी बांधने जैसा था। मॉनिटर वरुण ने हिम्मत कर टीचर से कहा, मैडम, आपने नौ दूनी सोलह लिखा है, जबकि वह अट्ठारह होना चाहिए। अब क्लास के सभी बच्चे ठहाका मारकर हंसने लगे। निशा मैडम भी हंसने लगीं। फिर बोलीं, मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप सबको नौ का पहाड़ा याद है। पर आपमें से किसी ने क्या यह सोचा कि मैंने नौ का पहाड़ा लिखा है या और कुछ? क्या मुझे यह नहीं पता कि आप सब को नौ का पहाड़ा आता होगा? अब बच्चे खामोश होकर निशा मैडम को सुन रहे थे। मैडम बोलीं, यह आपकी क्लास का पहला सबक है कि बिना जाने-समझे किसी पर हंसना बेवकूफी है। दूसरा सबक, हम अक्सर जिंदगी के नकारात्मक पहलू से इतना जुड़ जाते हैं कि सकारात्मक पहलू दिखना बंद हो जाता हैं। जैसे आप सबको नौ के इस पहाड़े में सिर्फ एक गलती दिखी, जबकि बाकी पहाड़ा सही था, उस बारे में आपने कुछ नहीं कहा। बोर्ड पर गलती देखकर भले आप हंस पड़े, पर असल जिंदगी में किसी दूसरे के साथ ऐसा बिल्कुल भी मत कीजिएगा। और आज की क्लास का आखिरी सबक यह है कि मेरी क्लास में हमेशा हंसते रहिए। ठीक वैसे ही, जैसे आप थोड़ी देर पहले हंस रहे थे। आखिर हम दोस्त हैं न? अब बच्चों की जान में जान आई। सभी बच्चे खुश होकर जोर से चिल्लाने लगे, यस मैडम।*

बिना जाने-समझे किसी पर हंसना अपनी बेवकूफी का प्रदर्शन करना है।

खुली खिड़की

दुनिया में किताबों की दुकान

वैश्विक स्तर पर बड़ी संख्या में किताबों के शौकीन मौजूद हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक किताब की दुकानों के मामले में मेलबर्न पहले स्थान पर काबिज है।

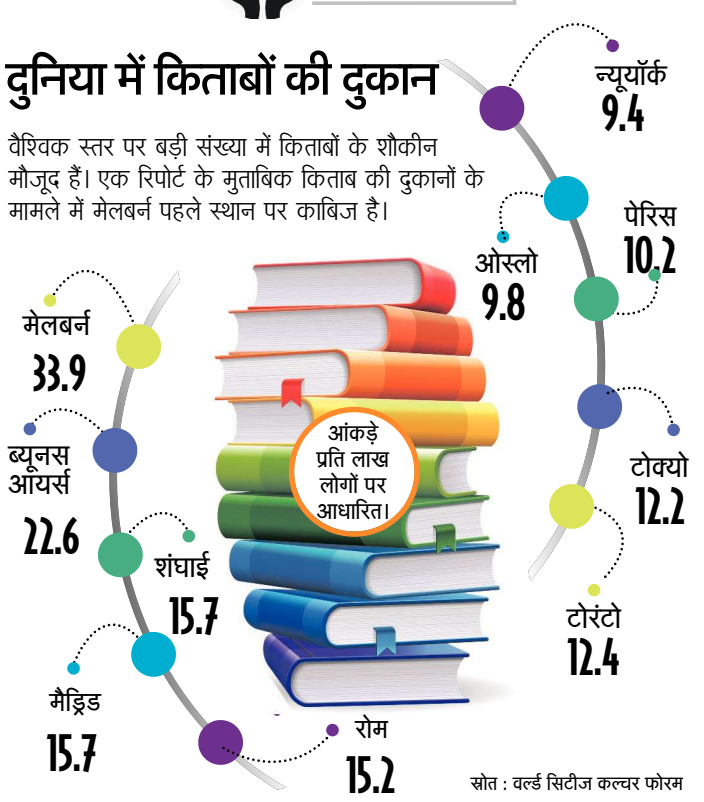

स्रोत : वर्ल्ड सिटीज कल्चर फोरम

सत्संग

कल किसने देखा है

एक दिन दरबार खत्म होने पर युधिष्ठिर अपने भाइयों तथा पत्नी द्रोपदी के साथ वार्तालाप कर रहे थे कि द्वारपाल ने आकर सूचना दी कि कोई दो अतिथि युधिष्ठिर से मिलना चाहते हैं। युधिष्ठिर ने द्वारपाल से उन्हें दूसरे दिन आने को कहा। यह देख भीम वहां से उठकर चले गए और राजमहल के पास लगा विशाल घंटा बजाने लगे। किसी को कोई आश्चर्यजनक बात दिखाई दे, तभी वह घंटा बजाया जाता था। भीम स्वयं विशाल कायावाले और घंटा भी विशाल आकार का था। भीम उसे जोर-जोर से बजा भी रहे थे। कर्कश आवाज से सबके कान दहल गए। युधिष्ठिर ने भीम से घंटा बजाने का कारण पूछा। इस पर भीम वहां मौजूद नागरिकों को संबोधित कर बोले, 'ऐ प्रजाजनो, हमारे राजा तो यमराज से भी श्रेष्ठ हो गए हैं।' 'क्या कह रहे हो? साफ-साफ क्यों नहीं कहते? युधिष्ठिर ने प्रतिप्रश्न किया। भीम ने उत्तर दिया, 'महाराज अभी-अभी आपने दो अतिथियों को कल आने के लिए कहा है। इसका अर्थ हुआ कि आपको पूरा विश्वास है कि आप कल तक जीवित रहेंगे, जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य को बिल्कुल भी भरोसा नहीं है कि दूसरे दिन क्या होने वाला है। आपका उन्हें कल बुलाना यह सूचित करता है कि आप अवश्य ही कल इस पृथ्वी पर रहेंगे।' धर्मराज को अपनी गलती महसूस हुई। उन्होंने उसी समय उन दोनों अतिथियों को बुलाकर उनसे भेंट की।

-संकलित